भारतीय जीवन दृष्टि में शिक्षा

डॉ. शंकर शरण श्रीवास्तव

यह मानव का स्वभाव है कि अतीत, वर्तमान और भविष्य में एक साथ जिये बिना नहीं रह सकता। अतीत से जुड़ने के पीछे भारतीय जीवन दर्शन या व्यवहार में पलायन का भाव नहीं है क्योंकि वह वर्तमानजीवी दर्शन है, वह सत्य और ऋत् का गठबन्धन है। भारत में अतीत से जुड़ने का अर्थ वर्तमान की सम्भावना का विस्तार है। वर्तमान एक माध्यम है जो अतीत की शाश्वत सनातन जीवन दृष्टि को भविष्य की यात्रा में पाथेय के रूप में अपने को प्रस्तुत करता है किन्तु एकमात्र माध्यम होने के कारण 'भूत' और 'भविष्य' से अधिक महत्वपूर्ण है।

इस दृष्टि से जब हम भारतीय ज्ञान–विज्ञान पर विचार करते हैं तो सर्वप्रथम भारतीय विश्व–दृष्टि और पाश्चात्य विश्व–दृष्टि में एक मौलिक भेद स्पष्ट झलकता है। पाश्चात्य दृष्टि में प्रकृति की शक्तियाँ मनुष्य से अलग हैं और इसलिए दोनों में टकराव है, स्पर्धा है। मनुष्य के मन में प्रकृति पर विजय पाने की बात आती है। वह प्रकृति को पराजित कर उसका शोषण करना चाहता है। उसके लिए प्रकृति भोग्य है और वह उसका भोक्ता बन जाता है। इसके ठीक विपरीत भारतीय विश्व–दृष्टि मनुष्य और प्रकृति में विलगाव नहीं देखती, उसे एकात्म या अविलग देखती है– बाहर से जो सूर्य का प्रकाश है, वही भीतर बुद्धि, विवेक एवं ज्ञान का प्रकाश है, बाहर जो अंधकार है, वही भीतर का भय एवं अज्ञान है, बाहर जो पेड़–पौधों में ऊपर उठने की प्रक्रिया है वही भीतर की उमंग है। इसीलिए मनुष्य और प्रकृति में स्पर्धा नहीं सहकार–भाव है, एकात्म भाव है (मिश्र)।

भारतीय हिन्दू चिन्तन में प्रकृति से सामंजस्य और समग्र अस्तित्व में परम सामंजस्य स्थापित करना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। इसमें न निरपेक्ष रूप में भोग्य है न निरपेक्ष रूप में भोक्ता। या तो मनुष्य सहभोक्ता है या सभी सहभोक्ता हों, इसके लिए अपने को अर्पित करने वाला भोग्य है। वह अन्न भी है, अन्नाद भी है (अन्न को खाने वाला भी है।) वह 'तेन त्यक्तेन भुंजीथा' में विश्वास रखता है।

ईशावास्यमिदं सर्वम् यत किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यास्विद् धनम् ।।

ईशावास्योपनिशद्–1

अतः भारतीय ज्ञान–विज्ञान का उद्देश्य वस्तुओं की पहचान मात्र नहीं है। उसका उद्देश्य समस्त वस्तुओं की पहचान करके उनमें उनकी प्रतीयमान सत्ताओं को अलग–अलग वर्गीकृत करके उनमें एक अव्यय–भाव एक न खुलने वाला भाव खोजना है। उसका लक्ष्य है मनुष्य को समस्त चर अचर में एकात्म का बोध कराना तथा प्राणी मात्र के लिए समर्पित एवं कटिबद्ध बनना। इसका साध्य है व्यष्टि को समष्टि की सेवा में लगाते हुए परमेष्टि में विलीन होना।

इस पृष्ठभूमि में हमें वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य पर दृष्टिपात करना होगा और भारतीय शैक्षिक कार्यों को व्यक्ति उन्मुखता, भोगोन्मुखता से मुक्त करा समाजोन्मुख और सेवान्मुख

---

* पूर्व अध्यक्ष एवं संकाय अधिष्ठाता शिक्षा संकाय, का.हि.वि.वि वाराणसी

बनाते हुए मुक्ति उन्मुख बनाना होगा, 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद् हिताय च' को चरितार्थ करना होगा।

दुर्भाग्य यह है कि वर्तमान भारत में जिन शिक्षकों, शिक्षा अधिकारियों, राज्य–तंत्र एवं प्रबन्ध तंत्र के नीति निर्धारकों के अधीन वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली है वे उपर्युक्त भारतीय जीवन दृष्टि पर आधरित शिक्षा को समझने में असमर्थ हैं। अतः यहाँ भारतीय जीवन– दृष्टि और पाश्चात्य जीवन– दृष्टि पर आधारित शैक्षिक प्रतिमानों का तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करना समीचीन होगा।

तालिका 1–शिक्षा के भारतीय एवं पाश्चात्य प्रतिमानों की विभिन्न शैक्षिक आयामों पर तुलनात्मक विवरण

भारतीय जीवन–दृष्टि पर आधारित शिक्षा	पाश्चात्य जीवन–दृष्टि पर आधारित शिक्षा
–सम्पूर्ण सृष्टि चैतन्य से उदभूत है इस जीवन दृष्टि पर आधारित।	–सम्पूर्ण सृष्टि जड़ पदार्थ से उदभूत है, इस जीवन दृष्टि पर आधारित।
–शिक्षा जीवमान रचना।	–शिक्षा जड़ पदार्थ।
–शिक्षा का लक्ष्य मुक्ति।	–शिक्षा का लक्ष्य कामनापूर्ति।
–शिक्षा का उद्देश्य समग्र विकास।	–शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व विकास।
–साधना सापेक्ष।	–साधन सपेक्ष।
–शिक्षा पवित्र कार्य है।	–शिक्षा क्रय–विक्रय की वस्तु है।
–शिक्षक शिक्षातंत्र का अधिष्ठाता है।	–शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षातंत्र का एक सामान्य सा पुर्जा है।
–शिक्षा विवेक सापेक्ष है।	–शिक्षा यांत्रिक नियमों से बद्ध। है।
–शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध आत्मिक है।	–शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध व्यापारी और ग्राहक का है।

इस तुलना से यह स्पष्ट है कि वर्तमान भारत की शिक्षा भारतीय जीवन दर्शन पर आधारित न होकर भारतीयेतर जीवन दृष्टि पर आधारित है। फलस्वरूप भारत का प्रत्येक विद्यार्थी जिसके रक्त, अन्तःचेतना एवं अन्तःकरण में भारतीय जीवन दृष्टि अनन्त काल से वास करती आ रही है वह एक आन्तरिक अनजाने और अनचाहे अन्तर्द्वन्द्व से सदा ग्रसित रहता है। वह अपेक्षा करता है और चाहता है 'भारतीयता' किन्तु शिक्षातंत्र 'अभारतीय' है। अभारतीय तंत्र की अपनी जो समस्यायें हैं वे पाश्चात्य जगत में वासना और भोग के नग्न तांडव के रूप में दिखाई दे रही हैं। अब उस नग्न ताण्डव का प्रभाव भारत में भी बहुत तेजी से तथाकथित भारतीय शिक्षितों के भ्रष्टाचार दुराचार के रूप में भारतीय समाचार–पत्रों की सुर्खियों में है।

पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली ने भारतीय शिक्षा को अपनी परम्परा से उपलब्ध तत्व चिन्तन, ज्ञान मीमांसा, नीति एवं विश्वास, व्यवस्था एवं प्रबन्धन से काटकर अलग–थलग कर दिया है। फलस्वरूप भारतीय समाज निर्धनता, निरक्षरता, भ्रष्टाचार, अनाचार एवं व्यभिचार से ग्रसित होता जा रहा है, अपने 'स्वभाव' और 'स्वधर्म' को त्याग कर नकलची बन्दर के समान पाश्चात्य–दृष्टि एवं शिक्षा प्रणाली के ताल पर नाच रहा है और इसी में फूल कर कुप्पा बनकर शैक्षिक विस्तार का ढिंढोरा पीट रहा है।

भारतीय शास्त्रों एवं जीवन–दर्शन के अनुसार शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य है दुःख से निवृत्ति, मुक्ति, मोक्ष या परमानन्द की प्राप्ति। शिक्षा की एक ही परिभाषा 'सा विद्या या विमुक्तये' सभी को मान्य है।

यह 'मुक्ति' तभी मिलेगी जब हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली इस उद्देश्य को अपना ले और इसी के अनुरूप पाठ्यक्रम एवं विषय–वस्तु का निर्धारण एवं उपयोग करे। शिक्षा के समस्त आधार दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक, भारतीय दर्शन एवं शास्त्रों पर आधारित हों न कि पाश्चात्य दर्शन और जीवन–दृष्टि पर।

भारतीय शास्त्रीय शैक्षिक उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हमारे शास्त्रों में पाठ्यक्रम निर्धारण के लिये स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं। हमारे जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु हमें 'विज्ञान' की शिक्षा चाहिए और उसके साथ ही जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति या मुक्ति की प्राप्ति के लिए 'ज्ञान' की शिक्षा की आवश्यकता है। हमारे शास्त्रों एवं जीवन–दर्शन में इसे ही विज्ञान और ज्ञान, अविद्या और विद्या, परा एवं अपरा विद्या कहा है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तत्वेदोभयं सह
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुतो।

यजुर्वेद – 40–41

अर्थात अविद्या से संसार सागर को पार कर विद्या से अमरत्व प्राप्त किया जाता है। सांसारिक जीवन के दायित्वों को पूर्ण करने के लिए शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष निरूक्त एवं सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त किया जाय तथा वेद, उपनिषद आदि से अक्षर ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त किया जाये जो मोक्ष की प्राप्ति करवाए।

ज्ञान और विज्ञान से युक्त व्यक्ति को ही गीता में भगवत प्राप्ति का अधिकारी समझा गया है–

ज्ञान विज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मका चनः।।

गीता – 6 – 8

अर्थात ज्ञान–विज्ञान से तृप्त है अन्तःकरण जिसका तथा विकार रहित है स्थिति जिसकी और अच्छी तरह जीती हुई हैं इन्द्रियाँ तथा समान हैं मिट्टी पत्थर और सुवर्ण जिसके लिए, वह योगी मुक्त अर्थात् भगवत की प्राप्ति वाला है।

जिन भारतीयों में अभी भी भारतीय जीवन–दृष्टि अंगारे के समान प्रज्ज्वलित एवं प्रकाशवान है और जिनपर पाश्चात्य शिक्षा के आडम्बर की राख नहीं जमी है, वे निष्ठापूर्वक जानते हैं कि जिस प्रकार आत्मा अजर और अमर है उसी प्रकार भारतीय जीवन–दृष्टि भी। उनमें आज भी पूर्ण विश्वास है कि भारतीय शास्त्रीय सन्दर्भ में वर्तमान भारतीय शिक्षा की पुनर्रचना कर भारत विश्व को विनाश के गर्त में गिरने से बचा सकता है।

भारतीय शैक्षिक पुनर्रचना को कार्यान्वित करने हेतु बहन इन्दुमति काटदरे के विचारों को यहाँ उद्धृत करना अत्यन्त समीचीन होगा– 'यदि हमें भारतीय शिक्षा की सेवा करनी है तो–

- भारतीय शिक्षा की वर्तमान विकृति के मूल में जाना होगा।
- भारतीय शाश्वत चिन्तन, दर्शन एवं शैक्षिक सनातन तत्वों का युगानुकूल व्यवहारिक रूप देना होगा।
- भारतीय जनता में इनके लिए स्वीकृति बनाने हेतु 'लोकमत परिष्कार' का व्यापक कार्यक्रम बनाना होगा।

- भारतीय चिन्तन के अनुरूप शिक्षा के प्रयोग क्षेत्रों का निर्माण करना होगा तथा प्रयोग करते–करते चिन्तन को परिष्कृत करना होगा।
- भारतीय राजतंत्र को भी भारतीय चिन्तन प्रयोग एवं उसके प्रचार–प्रसार हेतु अनुकूल बनाना होगा।

संदर्भ ग्रन्थः–

- काटदरे, इन्दुमति : भारतीय चिन्तन की दिशा
- ईशोवास्योपनिषद : गीता प्रेस, गोरखपुर
- मिश्र, विद्या निवास : हिन्दू धर्म : जीवन में सनातन की खोज
- श्रीमद्भगवद्गीता : गीता प्रेस, गोरखपुर
- यजुर्वेद : गायत्री तपोभूमि मथुरा
- श्रीवास्तव, शंकर शरण : भारतीय शिक्षा दर्शन
- स्वामी, आनन्द कुमार : हिन्दुइज्म एण्ड बुद्धिज्म
- हाइमन, बेटी : फेसेट्स ऑफ इन्डियन थॉट